HISTORY, B.A. HONS. II - PAPER II

EFFECTS OF THE CONTINENTAL SYSTEM
महाद्वीपीय योजना के परिणाम

नेपोलियन द्वारा प्रारम्भ की गयी महाद्वीपीय योजना के दूरगामी परिणाम हुए। इस नीति से इंग्लैण्ड को उतनी हानि नहीं हुई जितनी कि नेपोलियन ने अपेक्षा की थी। इस योजना के निम्नलिखित परिणाम हुए :-

(i) इंग्लैण्ड के साथ व्यापार बन्द होने से फ्रांस तथा उसके मित्र देशों में दैनिक वस्तुओं का अभाव होने लगा। इससे वे नेपोलियन के विरोधी हो गये।

(ii) इस योजना को लागू करने के लिए नेपोलियन ने अनेक देशों से युद्ध किये, जिससे उसके शत्रुओं की संख्या बढ़ी। अन्ततः यही युद्ध नेपोलियन के पतन के कारण बने।

(iii) इस योजना का इंगलैण्ड पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। देश में अनाज मंहगा हो गया एवं अंग्रेजी वस्तुओं के दामों में भारी कमी आयी। अतः आर्थिक संतुलन बनाये रखने के उद्देश्य से इंगलैण्ड की सरकार को जनता पर लगे हुए करों में वृद्धि करनी पड़ी एवं अन्य देशों से कुरता लेना पड़ा, किन्तु नेपोलियन ने जितना सोचा था उतना प्रभाव इस व्यवस्था का इंगलैण्ड पर नहीं हुआ। सम्भवतः इसी कारण स्टीफेन्स ने लिखा है, "इस व्यवस्था ने इंगलैण्ड की सम्पन्नता को कम करने के स्थान पर उसमें वृद्धि की।"

(iv) इस व्यवस्था का आर्थिक प्रभाव फ्रांस पर भी पड़ा। वहाँ हजारों मजदूर बेकार हो गये। फ्रांस का मध्यमवर्ग भी नेपोलियन का विरोधी हो गया।

(v) इस व्यवस्था ने भविष्य में अनेक युद्धों (प्रायद्वीपीय युद्ध आदि) को जन्म दिया।

(vi) कैथोलिक जनता नेपोलियन का विरोधी हो गयी क्योंकि उसने पोप को बन्दी बनाया था।

(vii) इंगलैण्ड ने अपने यहां बना माल अनेक ऐसे देशों को भेजा जो प्रत्यक्षतः उसके पक्ष में न थे। इस प्रकार इंगलैण्ड को अपने सम्बंध सुधारने का अवसर मिल गया।

(viii) टिलसिट की संधि के पश्चात् जो देश फ्रांस के मित्र बन गये थे वे भी इस महाद्वीपीय व्यवस्था के कारण नेपोलियन के विरुद्ध हो गये। नेपोलियन इस व्यवस्था के कारण ऐसे चक्र-जाल में फंस गया जिससे वह कभी बाहर न निकल सका।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इस व्यवस्था के व्यापक परिणाम हुए।

CAUSES OF THE FAILURE OF CONTINENTAL SYSTEM
महाद्वीपीय व्यवस्था की असफलता के कारण

नेपोलियन ने इस व्यवस्था को सफल बनाने के लिए अत्यधिक प्रयत्न किये थे, किन्तु फिर भी इस कार्य में वह सफल न हो सका। तत्कालीन परिस्थितियों के अतिरिक्त इस योजना में अनेक त्रुटियाँ थीं जिनके कारण यह व्यवस्था असफल प्रमाणित हुई।

Oxford

→

इस योजना के असफल होने के कारण निम्नलिखित थे :-

(i) इंगलैण्ड में अन्न की बहुत कमी थी। नेपोलियन को चाहिये था कि वह अन्न का आयात इंगलैण्ड में न होने देता, किन्तु नेपोलियन ऐसा न कर सका। रोज ने लिखा है, "महाद्वीपीय योजना तभी सफल हो सकती थी जबकि नेपोलियन वहाँ अनाज को भेजना बन्द कर देता, परन्तु नेपोलियन यह अमानवीय कार्य न कर सका और इसलिये यह योजना भी सफल न हुई।"

(ii) इंगलैण्ड से चोरी-छिपे होने वाले व्यापार को भी नेपोलियन रोक न सका।

(iii) अनेक राज्यों ने किन्हीं विवशताओं के कारण इस व्यवस्था को स्वीकार किया था, उन्होंने अवसर मिलते ही इंगलैण्ड से व्यापारिक सम्बंध पुनः कायम कर लिए।

(iv) यूरोप के राज्यों की जनता को दैनिक उपयोग की वस्तुएँ न मिल पाने के कारण जनता नेपोलियन तथा उसकी नीति का विरोध करने लगी। स्वयं फ्रांस की जनता इस महाद्वीपीय व्यवस्था से तंग आ गयी थी।

(v) तटस्थ देश भी नेपोलियन के विरोधी हो गये क्योंकि नेपोलियन ने उन पर भी इस व्यवस्था को लागू करने का प्रयास किया।

(vi) नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण करके उसे बन्दी बना लिया था। इससे कैथोलिक जनता नेपोलियन की विरोधी हो गयी।

(vii) स्पेन एवं पुर्तगाल ने इंगलैण्ड का ही समर्थन किया।

(viii) महाद्वीपीय योजना एक अव्यवहारिक योजना थी। सम्पूर्ण यूरोप के विशाल क्षेत्र पर किसी भी एक देश के लिए निषेधाज्ञा व निगरानी रखना सम्भव न था। इसके अतिरिक्त नेपोलियन का यह विचार कि यूरोप के लोग इंगलैण्ड को पराजित करने के लिए अपना सब कुछ त्याग देंगे और अपार कष्ट सहन कर लेंगे, तर्कसंगत नहीं था, यह निःसंदेह नेपोलियन एक बड़ी भूल थी।

(ix) महाद्वीपीय व्यवस्था शक्तिशाली नौसेना के अभाव में सफल नहीं हो सकती थी। फ्रांस की नौसेना शक्तिशाली नहीं थी, अतः इस योजना का असफल होना स्वाभाविक ही था।

EVALUATION OF THE CONTINENTAL SYSTEM
महाद्वीपीय व्यवस्था का मूल्यांकन

नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था के विषय में फिशर ने लिखा है, "महाद्वीपीय व्यवस्था का तर्कपूर्ण परिणाम ही नेपोलियन के जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना थी।" निःसंदेह महाद्वीपीय योजना नेपोलियन की असफल योजनाओं में से एक थी। नेपोलियन का विचार था कि इस नीति के द्वारा वह इंगलैण्ड को घुटने टेकने पर विवश कर देगा, किन्तु ऐसा सोचना उसकी भारी भूल थी। नपोलियन की इस नीति ने अधीन देशों को उसका शत्रु बना दिया। केवल यूरोप अपितु फ्रांस के लोग भी नेपोलियन के विरोधी हो गये। नेपोलियन की इंगलैण्ड के निर्यात को नष्ट करने की नीति सफल नहीं हो सकी।

क्योंकि इंगलैण्ड ने अपनी शक्तिशाली नौ सेना की सहायता से नवीन बाजारों का निर्माण कर लिया। महाद्वीपीय नीति के कारण नेपोलियन को अनेक भीषण युद्धों से उलझना पड़ा, जिसके कारण उसकी सम्पूर्ण शक्ति नष्ट हो गयी। इसी कारण हेजन ने लिखा है, "अन्ततः इस नीति ने उसे अनिवार्य रूप से आक्रामक युद्धों की नीति में उलझा ने उलझा दिया..... जिसके परिणाम विनाशकारी हुए, और उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी।" इस प्रकार असफल होने के कारण 1813 ई० में महाद्वीपीय व्यवस्था समाप्त हो गयी।

("The Continental System had to be virtually abandoned in 1813 because it was a failure.")

J. V. Smith.